हिन्दी विभाग

डॉ. कमलेश कुमार पाण्डेय

बी. ए. – प्रथम सत्र, CC-1(पत्र)

विषय- आदिकाल

उपविषय- आदिकाल की परिस्थितियाँ

1

आदिकाल की परिस्थितियाँ

Slide 2

1 Unknown User, 26-09-2019

- हिन्दी साहित्य के इतिहास की सर्वप्रथम सशक्त एवं सुस्पष्ट योजना आचार्य रामचंद्र शुक्ल के द्वारा 'हिन्दी शब्द-सागर की भूमिका' में प्रस्तावित हुई थी। शुक्लजी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार कालों में विभाजित किया है- वीरगाथाकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल। अन्य इतिहासकारों एवं आलोचकों ने 'वीरगाथाकाल' को 'आदिकाल' के नाम से अभिहित किया है।
- किसी भी युग का अध्ययन करने से पहले उस युग विशेष की परिस्थितियों को जानना आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक युग का साहित्य अपने समय की परिस्थितियों का संवाहक होता है।
- आदिकाल की निम्नलिखित परिस्थितियाँ हैं-

I. राजनीतिक परिस्थितियाँ

- उत्तर भारत में 10वीं-11वीं शताब्दियों में प्रतिहारों का राज्य बना रहा- चेदि (दक्षिण बुंदेलखंड), मालवा, गुजरात, सांभार और गौड़।
- 10वीं शताब्दी के अन्त में महमूद गजनवी का आगमन।

महमूद गजनवी ने पंजाब, कन्नौज, मथुरा, ग्वालियर और कालिंजर को लूटा।

सौराष्ट्र के सोमनाथ मन्दिर को लूटा।

- मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान का तराईन का युद्ध हुआ।

2. धार्मिक परिस्थितियाँ

- वैदिक और पौराणिक धर्म के विविध रुपों के साथ बौद्ध और जैन धर्म भी अपने वास्तविक आदर्शों से दूर हट गए।
- बौद्ध धर्म जन्त्र-मंत्र-तंत्र की सिद्धियों के चक्कर में पड़कर विकृत हो गया।
- बौद्ध धर्म ने महायान, वज्रयान और सहजयान आदि के रूप धारण किए।
- अपभ्रंश में लिखित चौरासी सिद्धों और नाथपंथियों का साहित्य बौद्ध धर्म के विकृत सम्प्रदायों की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का परिचय है।

- अगली कक्षा में हमलोग सामाजिक और साहित्यिक परिस्थितियों पर चर्चा करेंगे।

धन्यवाद